ठहर जाता हूं मैं

ठहर जाता हूं मैं

मधु के गांव में

धीरे से चली आओ तुम

घुंघरू बांध कर पांव में।

ठहर जाता हूं मैं

पलक पांवड़े बिछाए

खुशबू सी चली आओ तुम

महकती हवाओं में।

ठहर जाता हूं मैं

तुम्हारे इंतज़ार में

आ सको चांदनी सी

मेरी बाहों में।

Scanned with OKEN Scanner

तुम हो पावन सुरसुरी

वेद की ऋचाओं सी

आचमन कर लूं ज़रा

भावनाओं के गांव में।

हो प्रीत की माधुरी

चंचल चितवन सी तुम

ठहरना नहीं चलती रहना ही तुम

रास्ता कठिन है बढ़ती रहना ही तुम

सफर में अकेला हूं

ठहर जाता हूं मैं

समिधा सी तुम

हवन भी तुम

हो अगर की धूम्र सी

सूंघ लेता हूं मैं।

Scanned with OKEN Scanner

चंदन सी तुम

भाल पर हो सजी

हो पुण्य सलिला सी तुम

प्रणाम करता हूं मैं

ठहर जाता हूं मैं

हैं सफर बहुत लम्बा

कब से चल रहा हूं

कलम को थामे

हमेशा जगा हूं

हिन्दी की बिंदी ही

सजा रहा हूं

कुछ पृष्ठ भर लूं

रुको भावनाओं

जल्दी नहीं है

Scanned with OKEN Scanner

रुको कामनाओं

तुम्हारे आंचल तले

ठहर जाता हूं मैं।

चली आओ तुम

पहली किरण सी

तम भरी रातों में

दिव्य उजास सी

काव्य के भाव सी

उड़ चलो आकाश में

सितारे लिए गोद में

बुन रहा हूं मै

सपनों के संसार को

अधूरे सवालों को लिए

गुनगुना रहा हूं मै

ठहर जाता हूं मैं।

सुधा गोयल

Scanned with OKEN Scanner